प्रकाशन तिथि : 15 अक्टूबर, 2020
प्रेषण तिथि : 19 अक्टूबर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 15 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

जन्म शताब्दी वर्ष पर साप्ताहिक उद्‌बोधन माला

श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य माट्साब आयुवानसिंह जी की 100वीं जयंती के अवसर पर वर्चुअल उद्‌बोधन माला का आयोजन किया जा रहा है। इस साप्ताहिक उद्‌बोधन माला में 11 से 17 अक्टूबर 2020 तक उनके जीवन के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी देकर उन्हें श्रद्धांजलि दी जा रही है। 11 अक्टूबर को पूज्य आयुवानसिंह जी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ विषय पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह जी सरवड़ी ने कहा कि महामारी के कारण हम उन्हें भौतिक रूप से कार्यक्रम कर श्रद्धांजलि अर्पित नहीं कर पाए लेकिन उनका स्मरण पूरे वर्ष बना रहा। महामारी से पूर्व अनेक भौतिक कार्यक्रम किए गए, शाखाओं में उनके साहित्य पर चर्चा की गई। महामारी के उपरान्त केन्द्रीय वर्चुअल शाखा में उनकी पुस्तक 'मेरी साधना' पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि पूज्य माट्साब का जन्म आश्विन सुदी पंचमी संवत् 1977 तद्नुसार 17 अक्टूबर 1920 को नागौर जिले की नावां तहसील के हुडील गांव में ठाकुर पेहपसिंह के घर हुआ। छोटी उम्र में शादी होने के कारण आठवीं से आगे चौपासनी विद्यालय में पढ़ नहीं पाए और स्वयंपाठी के रूप में एम.ए., एल.एल.बी. तक की पढ़ाई की। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। पढ़ाई छुटने के बाद ड्रिल मास्टर के रूप में अध्यापक की नौकरी की।

वे संघ के संघ प्रमुख रहे। ऐसे में संघमय ही थे। संघ के अनुकूल हुए बिना किसी को दायित्व कैसे मिल सकता है। अनेक कारणों से लोग संघ में आते हैं उनमें प्रमुख कारण सामाजिक भाव है। पूज्य आयुवानसिंह में सामाजिक भाव कूट-कूट कर भरा था। इसीलिए 1942 में 'प्रजासेवक' नामक अखबार में 'राजपूतों से द्वेष क्यों' विषय पर पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखे लेख से प्रभावित हो उन्होंने 5 फरवरी 1942 को मेड़ता से उन्हें एक पत्र लिखकर बधाई दी, अपने साथ पढ़ रहे सोए हुए नरसिंहो को जगाने के लिए आह्वान किया। पूज्य तनसिंह जी उस समय चौपासनी में मैट्रिक में पढ़ रहे थे। यह दोनों का प्रथम परिचय था। पिलानी में अध्ययनरत रहते तनसिंह जी व उनके साथी उत्थान व संघर्ष नामक हस्तलिखित पत्रिका निकालते थे एवं पूज्य आयुवानसिंह जी बाड़मेर में नौकरी करते हुए क्रांति संदेश नामक हस्तलिखित पत्रिका निकालते थे। आपस में ये हस्तलिखित पत्रिकाएं एक दूसरे को भेजकर विचारों का आदान-प्रदान चालू रहा। अक्टूबर 1944 में तनसिंह जी ने एक संगठन बनाने की संकल्पना के साथ माट्साब को पत्र लिखा। 23 अक्टूबर को माट्साब ने जवाब लिखा और उसमें बरती जाने वाली सावधानियों के साथ स्वयं को उसमें काम करने के लिए प्रस्तुत किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'ब्राह्मण एक स्थिति है, जाति नहीं'

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि जिस प्रकार सब ओर से परिपूर्ण स्वच्छ जलाशय के प्राप्त होने पर मनुष्य का छोटे जलाशय से जैसा प्रयोजन रहता है उतना ही प्रयोजन ब्रह्म को जानने वाले का वेदों में रहता है। वेदों से ऊपर उठने वाला ब्रह्म को जानता है इसीलिए अर्जुन। तुं वेदों से ऊपर उठ, ब्राह्मण बन। इस प्रकार गीता के अनुसार ब्राह्मण एक स्थिति है जिसे हासिल किया जाता है। फरीदाबाद स्थित आश्रम में अपने प्रवास के दौरान अपने भक्तों से चर्चा करते हुए स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने गीता के चौथे अध्याय के 19वें श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा कि क्रमशः उत्थान करते-करते परमात्मा की प्रत्यक्ष जानकारी (ज्ञान) की अग्नि में कर्म सदा के लिए दग्ध हो जाते हैं। ऐसे ज्ञानी समवर्ती और समदर्शी होते हैं। उनकी दृष्टि चमड़ी पर नहीं बल्कि आत्मा पर पड़ती है। ऐसी स्थिति वाला ज्ञानी पंडित या ब्राह्मण कहलाता है। ऐसा महापुरुष वेदवित्त कहलाता है। इस प्रकार ब्राह्मण एक स्थिति है, सामाजिक व्यवस्था की कोई जाति नहीं है। ऐसे महापुरुषों की अपेक्षा समाज में जाति रूप में जन्में ब्राह्मणों द्वारा व्यवस्था के नियामक बनकर धर्म की परिभाषा निश्चित करने के कारण वास्तविक धर्म नष्ट हो गया और रुढ़ियों को धर्म माना जाने लगा। भारत का हिन्दू विश्व गुरु था लेकिन यही विश्व गुरु हिन्दू जब छूने खाने से नष्ट होने लगा, समुद्र पार जाने से नष्ट होने लगा तो गुरु नहीं रह पाया। धर्म के नाम पर विकृतियों का पोषक बन गया और इसीलिए भारत का पतन हो गया। धर्म का सही स्वरूप भगवान श्री कृष्णोक्त गीता है और यथार्थ गीता उसकी प्रमाणिक टीका है। इसके प्रचार प्रसार एवं अनुशीलन से ही भ्रमों का निवारण होगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

स्व. जसवंतसिंह जी को श्रद्धांजलि

अपने जोधपुर प्रवास के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री 2 अक्टूबर को स्व. जसवंतसिंह जसोल को श्रद्धांजलि देने उनके जोधपुर स्थित फार्म हाउस पर पहुंचे। वहां उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए एवं उनके पुत्र मानवेन्द्र सिंह व अन्य परिजनों से मिलकर सांत्वना दी। माननीय संघ प्रमुख श्री ने इस अवसर पर उनके साथ स्व. जसवंतसिंह जी के सदाशयता पूर्ण व्यवहार के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की। पूर्व विदेश, वित्त एवं रक्षा मंत्री सहित केन्द्रीय स्तर पर विभिन्न पदों पर रहकर अपने कौशल की छाप छोड़ चुके जसवंतसिंह जी को श्रद्धांजलि देने के लिए विभिन्न स्थानों पर विभिन्न समाजों एवं संस्थाओं द्वारा श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया गया। देश एवं विदेश के सभी ख्यातिनाम व्यक्तियों द्वारा उनके पुत्र एवं परिवारजनों को शोक संदेश प्रेषित किए जा रहे हैं। राज्य के सभी राजनीतिक दलों के राजनेताओं एवं अन्य विशिष्ट व आम लोगों ने जोधपुर स्थित उनके फार्म हाउस पर पहुंचकर उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

इस अंक में जाने पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में उल्लेखित शेखावटी क्षेत्र के महापुरुष 'शार्दुलसिंह' के बारे में जानकारी दी जा रही है।

शार्दूल सिंह गुढ़ा ठाकुर जुझारसिंह के पौत्र व जगराम सिंह के पुत्र थे। उनका जन्म वि.सं. 1738 में हुआ। शार्दुलसिंह की माता तंवराणी कुन्दन कंवर और पिता जगराम सिंह में अनबन के कारण उनका और उनके छोटे भाई सल्हेदी सिंह का बाल्यकाल अपने ननिहाल मावंडा में ही बीता, इनके नाना अर्जुनदास तंवर बड़े सरल भक्त हृदय व्यक्ति थे। किशोरावस्था आते-आते शार्दुलसिंह की वीरता की कहानियां क्षेत्र में सुनाई देने लगीं। भोजराज जी के वंशज अपने पैतृक राज्य उदयपुर से निकल कर अलग-अलग स्थानों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में लगे हुए थे। हरिपुरा युद्ध के बाद खंडेला पर शाही अधिकार हो चुका था और अजमेर के सूबेदार द्वारा जगह-जगह शाही चौकियां स्थापित कर दी गईं थी। खण्डेला को स्वतंत्र कराने के लिए शार्दूलसिंह ने अपने अग्रज गोपालसिंह के साथ मुगलों के विरुद्ध छापामार युद्ध प्रारम्भ कर दिया, वो अपने साथियों के साथ शाही परगनों में धावा मारने लगे। शाही परगनों में लूट-पाट मचा कर उन्होंने शाही व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया। अजमेर सूबेदार जब स्थिति को नियंत्रित नहीं कर पाया तो अंत में उसने खण्डेला राजा केसरीसिंह के छोटे भाई उदयसिंह को सौंप दिया और खण्डेला से मुगल आधिपत्य समाप्त हो गया।

बबाई और पपुराणा निरबाणों का राज्य था। वहां के निरबाण शासक के दो भाइयों ने राज्य लोभ में इस्लाम स्वीकार कर लिया तथा शाही सहायता से अपने भाई पपुराणा राव को राज्य से निकाल कर स्वयं शासक बन बैठे। पपुराणा राव ने शार्दूलसिंह से सहायता मांगी। शार्दूलसिंह व गोपालसिंह दोनों भाइयों ने पपुराणा पर आक्रमण किया, युद्ध में दोनों भाई फौलाद खां व बुलन्द खां मारे गए और राव जी को पुनः वहां का शासक बना दिया। उस समय शेखावटी और आसपास के क्षेत्र में नवाबों के अनेक छोटे-बड़े राज्य स्थापित थे। ऐसा ही एक नवलडी का नवाब झाझड़ ठाकुर फतहसिंह के हाथों मारा गया। नवाब की बेगम के कहने पर एक फकीर साजनिया, जो कि अकसर झाझड़ जाया करता था, रात्रि विश्राम के लिए झाझड़ फतहसिंह के पास रुका और अर्द्धरात्रि को सोते हुए फतेहसिंह पर छुरे से हमला कर दिया। फतेहसिंह ने साजनिया फकीर को मार दिया परन्तु घावों से हुए रक्त स्त्राव के कारण स्वयं भी मारे गए। इस घटना से क्रोधित होकर शार्दूलसिंह के नेतृत्व में शेखावतों ने नवलड़ी पर आक्रमण किया। नारसिंघाणी गांव के पास शार्दूलसिंह और नवलडी व आसपास के कयामखानियों की सेना में युद्ध हुआ। प्रतिशोध की भावना से युद्ध कर रहे शेखावतों के सामने कयामखानी टिक न सके। इस युद्ध में शार्दूलसिंह के छोटे भाई सल्हेदी सिंह ने अपूर्व वीरता का प्रदर्शन किया। अनेकों कयामखानी काल के ग्रास में समा गए। युद्ध में परास्त होकर मुस्लिम सेना भाग छूटी। इस युद्ध के परिणाम को देखकर किसी कयामखानी ने कहा :

'बुरी करी रै साजनियां तूं उल्टी राड़ बसाई
एक फतहसिंह कारणै चौरासी राड कराई।।'

विक्रम संवत् की अठाहरवीं सदी के उत्तरार्द्ध में झुंझुनूं पर कयामखानी नवाब रोहिला खां का शासन था। शासन पर उनकी पकड़ ना होने के कारण राज्य की व्यवस्था दयनीय स्थिति में थी। राज्य में चोर-डाकुओं का बोलबाला था, उसके अधीनस्थ नवाब स्वतंत्र आचरण कर रहे थे। ऐसे समय जब एक बार शार्दूलसिंह अपने भाई सल्हेदी सिंह के साथ झुंझुनूं आ रहे थे तब बुड़ाना के पठान (जो राहगीरों को लूटने का कार्य करते थे) ने जब शार्दूलसिंह और उनके भाई सल्हेदी सिंह को लूटने का प्रयास किया तो कई पठान दोनों भाइयों के हाथों मारे गए, उस समय का एक अन्य प्रसिद्ध डाकू दूढिया पाचोदा को शार्दूलसिंह ने कांट ग्राम में मार गिराया। यह सुनकर नवाब रोहिला खां ने कांट ग्राम का पट्टा शार्दूलसिंह के नाम कर दिया और इच्छा जाहिर की कि वे विद्रोही जमीदारों का दमन कर राज्य में शांति स्थापित करें। शार्दूलसिंह ने विद्रोही नवाबों को जब दण्डित करना प्रारम्भ किया तो ऐसे छोटे-बड़े नवाब कोलसिया के नवाब तारू खां के नेतृत्व में संगठित हुए। शार्दूलसिंह ने कोलसिया पर आक्रमण कर उनकी संगठित सेना को परास्त किया, सभी नवाबों ने शार्दूलसिंह को कर देना स्वीकार किया। शार्दूलसिंह ने राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का प्रबंध बड़ी कुशलता से किया। नवाब रोहिला खां ने अपनी बेगम की सलाह से राज्य का सम्पूर्ण प्रबन्ध शार्दूलसिंह को सौंप दिया। नवाब रोहिला खां ने जब शार्दूलसिंह द्वारा संचालित सुव्यवस्थित शासन को देखा और दूसरे और उदण्ड कयामखानियों को ले उसने अपना राज्य शार्दूलसिंह को सौंप दिया, इस प्रकार वि.सं. 1783 में शार्दूलसिंह झुंझुनूं के शासक बन गए। शेखावटी के एक अन्य प्राचीन नगर नरहड पर अब्दुल करीम खां पठान का शासन था। शार्दूलसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जोरावरसिंह ने नरहड़ पर अधिकार करने के लिए बगड़, जो कि अब्दुल करीम खां का मुख्य केन्द्र था पर आक्रमण किया। थोड़े से संघर्ष के बाद पठान बगड़ छोड़कर नरहड़ की ओर भाग गए, जोरावर सिंह ने अब नरहड़ पर आक्रमण किया। पठानों ने पूरी ताकत से जोरावर सिंह का मुकाबला किया परन्तु परास्त हुए। अब नरहड़ पर भी शार्दुलसिंह का अधिकार हो गया। भोजराजोतों की बढ़ती शक्ति को नष्ट करने के लिए खण्डेला शासक उदयसिंह और फतेहपुर के नवाब सरदार खां ने एक षड्यंत्र रचा जो बागोराम दगा नाम से जाना जाता है इसमें भोजराजोतों के बारह प्रमुख व्यक्ति मारे गए थे परन्तु शार्दूलसिंह और गोपालसिंह उस षड्यंत्र से बच निकले थे। फतेहपुर के नवाब सरदार खां से किन्हीं कारणों से फतेहपुर के अधिकांश प्रमुख कयामखानी नाराज थे, जिन्होंने उसे नवाब पद से अपदस्थ करने के लिए सीकर के राजा शिवसिंह से सहायता मांगी। शिवसिंह ने शार्दूलसिंह को सीकर बुला कर इस संबंध में चर्चा की। शिवसिंह और शार्दूलसिंह रायसल जी से छठी और पांचवी पीढ़ी में थे। इस नाते शार्दूलसिंह शिवसिंह के काका लगते थे। शार्दूलसिंह और शिवसिंह ने फतेहपुर पर वि.सं. 1786 ई. में आक्रमण किया। युद्ध में अपने विश्वस्त सहयोगियों के मारे जाते ही नवाब सरदार खां ने आत्म समर्पण कर लिया। सरदार खां को नवाब पद से हटाकर कुछ शर्तों के साथ कामयाब खां को फतेहपुर का नवाब बनाकर शार्दूलसिंह और शिवसिंह वापिस लौट गए। किन्तु नए नवाब कामयाब खां ने शर्तों का पालन नहीं किया साथ ही शार्दूलसिंह के झुंझुनूं पर अधिकार के बाद कयामखानियों में भय व्याप्त हो गया था कि शार्दूलसिंह और शिवसिंह कहीं उनके राज्यों को पूर्ण नष्ट ही ना कर दे अतः आपसी बैर भाव को भूलाकर समस्त कयामखानी एक हो गए। शार्दूलसिंह और शिवसिंह भी अब फतेहपुर के कयामखानी राज्य को समाप्त करना चाहते थे लेकिन वे जानते थे कि फतेहपुर पर आक्रमण के समय कयामखानियों को दिल्ली से सहायता मिल सकती है। दोनों ने इस संबंध में जयपुर महाराजा सवाई जयसिंह से वार्ता की। सवाई जयसिंह के आश्वासन के बाद कि मैं दिल्ली से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं आने दूंगा, शार्दूलसिंह और शिवसिंह ने फतेहपुर पर आक्रमण किया। मांडीला नामक स्थान पर उन्होंने अपना सैन्य पड़ाव डाला। नवाब भी अपनी सेना सहित युद्ध भूमि में आ गया। राजपूतों की सेना को दो भागों में विभक्त किया गया, एक भाग का नेतृत्व शार्दूलसिंह कर रहे थे तो दूसरे भाग का शिवसिंह।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

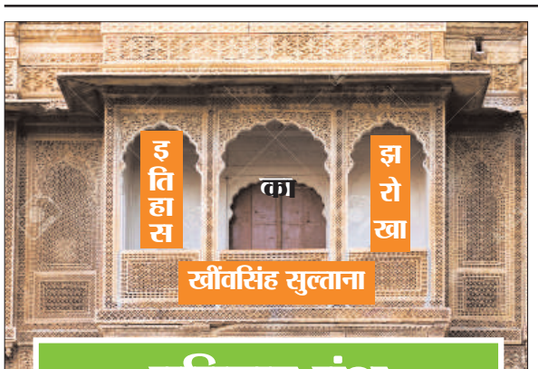

प्रतिहार वंश

मिहिर भोज के बाद उसका पुत्र महेन्द्रपाल प्रथम 885 ई. में प्रतिहार साम्राज्य का स्वामी बना, वह अपने पिता का योग्य उत्तराधिकारी था। उसने अपने पिता से उत्तराधिकार में मिले राज्य को ना केवल अक्षुण्ण रखा, अपितु उसका विस्तार भी किया। उसके स्वयं के व उसके सामान्तों के लेखों से उसके राज्य विस्तार का पता चलता है। अपने समकालीन पाल शासक को उसने परास्त किया। मालवा का परमार शासक वाक्पति और काठियावाड़ के चालुक्य उसके सामन्त रूप में विशेष सहयोगी थे। उसने सदैव अपने शत्रुओं को भयभीत रखा। महेन्द्रपाल न केवल एक विजेता एवं साम्राज्य निर्माता था, वरन् कुशल प्रशासक व विद्या और साहित्य का महान संरक्षक भी था। उसकी राजसभा में कर्पूरमंजरी, काव्यमींमासा के रचनाकार प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर और अन्य विद्वान आश्रय पाते थे। उन विद्वानों की रचनाओं से प्रतिहार साम्राज्य के वैभव व समृद्धि का पता चलता है। महेन्द्रपाल के शासनकाल में प्रतिहार साम्राज्य ने राजनीतिक व सांस्कृतिक रूप से अभूतपूर्व प्रगति की। कन्नौज को पुनः वहीं गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जो हर्ष के समय थी। महेन्द्रपाल के बाद कुछ समय के लिए भोज द्वितीय शासक बना परन्तु महेन्द्रपाल के एक अन्य योग्य पुत्र महीपाल ने उसे हराकर प्रतिहार साम्राज्य पर अपना अधिकार स्थापित किया। उसका शासन काल शान्ति तथा समृद्धि का रहा। कुछ काल के लिए प्रतिहार साम्राज्य पर राष्ट्रकूट शासक इन्द्र के रूप में संकट आया और महीपाल को पराजित होना पड़ा, परन्तु अपने सामन्तों चंदेलों और गुहिलोतों की सहायता से उसने शीघ्र ही अपने समस्त प्रदेशों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। महीपाल ने मेकल, कलिंग, केरल, कुलुट, कुन्तल आदि राज्यों पर विजय प्राप्त कर प्रतिहार साम्राज्य का विस्तार किया। महीपाल के समय भारत यात्रा पर आया मुस्लिम लेखक अलमसुदी महीपाल की अपार शक्ति एवं उसके प्रशासन की अत्यधिक प्रशंसा करता है। महीपाल प्रतिहार वंश के योग्य शासकों की श्रृंखला का अन्तिम शासक था। महीपाल ने 944 ई. तक शासन किया, उसके शासन काल के अन्तिम वर्षों में प्रतिहार साम्राज्य में राजनीतिक अस्थिरता प्रारम्भ हो गई। चन्देलों, परमारों व चेदिवंश ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। महीपाल के बाद प्रतिहार साम्राज्य को लगातार अयोग्य और निर्बल शासक मिले। इन शासकों की अयोग्यता और दुर्बलता के कारण प्रतिहार साम्राज्य की निरन्तर अवनति होती गई और प्रतिहार साम्राज्य अनेक भागों में विभक्त हो गया। दसवीं सदी के अंत तक आते-आते प्रतिहार साम्राज्य पूर्णतया छिन्न-भिन्न हो गया और यह कन्नौज के आसपास तक सिमट कर रह गया। भारतीय इतिहास में प्रतिहार वंश का महत्वपूर्ण स्थान है। हर्ष की मृत्यु के बाद प्रतिहारों ने ही सम्पूर्ण उत्तर भारत में एकछत्र साम्राज्य स्थापित किया। लगभग दो सौ वर्षों तक वे भारत भूमि की सीमाओं की रक्षा करते रहे, उन्होंने अरब आक्रमणकारियों से सफलतापूर्वक भारतीय सीमाओं व संस्कृति की रक्षा की। मुस्लिम लेखकों ने भी उनकी शक्ति, समृद्धि व वैभव की अत्यन्त प्रशंसा की है। वे मातृभूमि के सजग प्रहरी थे और इस रूप में उन्होंने अपना प्रतिहार नाम सार्थक कर दिया।

(क्रमशः)

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के
स्वयंसेवक एवं हमारे सहयोगी

श्री भवानीसिंह मुंगेरिया

के पुलिस निरीक्षक से
पुलिस उपाधीक्षक
के रूप में पदोन्नत होने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल
भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

नरेन्द्रसिंह तोगावास श्री करणी विद्या मंदिर, किरतासर नोखा। मो. 9950767432	**तेजसिंह नगवाड़ा** राधिका सेल्स, बीकानेर। मो. 9351206152	**करणीसिंह भेलू** चारणवाला इण्डैन गैस एजेन्सी, चारणवाला। मो. 9928514502
वीरेन्द्रसिंह सिंघाणा मो. 94149 33819	**हरिसिंह नयागांव** मो. 9461472422	**कर्णपालसिंह आलसर** मो. 9414547050
अनोपसिंह भादला जमवाय ई मित्र, भादला। मो. 8290306617	**विजयसिंह झंझेऊ** मो. 6375133125	**जेढूसिंह पुंदलसर** जगदम्बा इलेक्ट्रोनिक्स, श्री डूंगरपुर। मो. 9928070282
हणवंतसिंह आशापुरा मो. 9351210094	**जगतसिंह रेड़ा** मो. 9983771183	**खींवसिंह सुल्ताना** देव परिधान, बीकानेर। मो. 9460100194
भागीरथसिंह झंझेऊ मो. 9636889862	**रेवंतसिंह जाखासर** भगवती स्टूडियो, बीकानेर। मो. 9413013884	**कल्याणसिंह झंझेऊ** मो. 9799332127
मोहनसिंह कक्कू भारतीय जीवन बीमा निगम अभिकर्ता, बीकानेर। मो. 9414603678	**शक्तिसिंह आशापुरा** मो. 9829052037	**रामसिंह भादला** जमवाय ई मित्र, भादला, नोखा। मो. 9772405287

तनवीरसिंह खारी, मो. 7014015423, **जितेन्द्रसिंह खारी,** मो. 9460922915
Jaipur Trading Company Wholesale Chemist and Institution Suppliers, BIKANER

संपादकीय

रजपूती : रौब या दायित्व

प्रायः संघ प्रमुख श्री फरमाते हैं कि रजपूती विहीन राजपूत खाली खोखा (कार्टून) होता है जिसमें बाहर लेबल तो राजपूत का लगा है लेकिन भीतर से खाली है। इस प्रकार रजपूती राजपूत की आत्मा होती है। जैसे आग का दाहकत्व उसकी आत्मा है। जल की शीतलता उसकी आत्मा है उसी प्रकार रजपूती राजपूत की आत्मा है। क्षत्रियत्व क्षत्रिय की आत्मा है। रजपूती के अभाव में राजपूत या क्षत्रियत्व के अभाव में क्षत्रिय निरर्थक हो जाता है। आत्मा विहीन शरीर की भांति मृत प्रायः होता है। लेकिन रजपूती होती क्या है? क्या रजपूती का अर्थ रौब कायम करना है या इससे इतर भी कुछ है? इतिहास में राजपूत प्रायः शासक रहे हैं या शासन से संबद्ध रहे हैं अथवा शासक से संबद्ध रहे हैं। शासन और सत्ता प्रभाव साथ लेकर आती है। मध्यकाल के बाद लगातार विजातीय संस्कृतियों के संपर्क में रहने के कारण हमारे इस प्रभाव ने रौब का रूप ले लिया। अंग्रेजों ने कूटनीतिक रूप से हमें आमजन से दूर करने के लिए हमारी इस रौब की प्रवृत्ति को पोषित किया। इसीलिए इस काल में हम अपने आपको आम जनता से विशिष्ट समझने लगे। पहले यह प्रवृत्ति राजा महाराजा आदि बड़े लोगों में आई और उत्तरोत्तर उनके सम्पर्क में रहने के कारण सामान्य राजपूत में आई। शनैः शनैः हम रजपूती का मतलब रौब ही समझने लगे। इसीलिए तो कोई हमें 'खम्मा घणी' न करे तो हम अपमान समझने लगे। कोई हमारे बराबर बैठे तो हम नाराज होने लगे। कालांतर में समय के साथ यह चाह तो कम हुई लेकिन रौब जमाने की वह प्रवृत्ति अभी भी अन्दर जमी हुई है और वह किसी न किसी बहाने प्रकट हो ही जाती है। ऐसा लगता है कि रजपूती का अर्थ हमने रौब जमाना ही समझ लिया है। इसीलिए सरकारों से कुछ मांग करनी हो तो भी हम धमकी भरे लहजे में ही करते हैं। पार्टियों में प्रतिनिधित्व मांगने के लिए भी हम धमकी भरे लहजे में ही बात करते हैं। जो व्यक्ति बांहे चढ़ाकर धमकी भरे लहजे में किसी अधिकारी से बात करे तो हम उसे तुरन्त हमारा नेता स्वीकार कर लेते हैं। साथ ही चटखारे लेकर चर्चा भी करते हैं कि देखो अमुक नेताजी ने अमुक अधिकारी को ऐसे धमकाया, वह है असली राजपूत। जैसे राजपूत का मतलब धमकाना ही रह गया हो। रजपूती को रौब मानने की यह विकृति हमारे भीतर दबी पड़ी है और वह अवसर पाकर प्रकट हुए बिना नहीं रहती। अभी हाल ही में डूंगरपुर में हुए हिंसक प्रदर्शन को लेकर हमारे समाज के कुछ स्वयं को इंटेलेक्चुअल मानने वाले लोगों के समूह की चर्चा को जानने का अवसर मिला। वे इस प्रकार के आंदोलनों की आवश्यकता हमारे समाज में जताते कह रहे थे कि यह है सही तरीका। सरकारें ऐसे ही मानती हैं। सरकारों पर दबाव ऐसे ही बनाया जाता है। प्रशासन में डर ऐसे ही पैदा किया जाता है आदि-आदि। यह हमारे भीतर छिपी वह रौब जमाने की प्रवृत्ति ही है जो इस रूप में प्रकट हुई और यह उन लोगों की स्थिति है जो अच्छे पढ़े-लिखे हैं और स्वयं को इंटेलेक्चुअल मानते हैं तथा अपेक्षा भी करते है कि समाज इन्हें अग्रिम पंक्ति के नायक स्वीकार करे। जब इस स्तर के लोगों की यह स्थिति है तो आम युवा की क्या मनःस्थिति होगी यह आसानी से समझी जा सकती है। वह तो विशुद्ध रूप से रौब जमाने को ही रजपूती समझेगा और जब भी अवसर मिलेगा, रौब जमाने की कोशिश करेगा।

परन्तु समझने का विषय यह है कि रजपूती के कारण पैदा होने वाला प्रभाव या रौब परिणाम है, कारण नहीं। कारण तो रजपूती ही है और रजपूती रौब नहीं बल्कि दायित्व है। हमारे पूर्वजों का जो प्रभाव, जिसे हमने हमारी विकृति के कारण रौब मान लिया है, हमें इतिहास में दृष्टिगोचर होता है, वह उनकी उसी रजपूती के कारण था। उनके लिए रजपूती एक दायित्व हुआ करता था। सृष्टि के प्रति दायित्व, राष्ट्र के प्रति दायित्व, अपने गांव व समाज के प्रति दायित्व, अपने आप के प्रति दायित्व और जीव मात्र के प्रति दायित्व। वे अपने उस दायित्व को समझते थे। उस दायित्व का निर्वहन करते थे। उनके निर्वहन में आने वाली बाधाओं को अपनी जान पर खेलकर हटाते थे और उस दायित्व के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देते थे। इसीलिए उनका प्रभाव पैदा होता था। वे सदैव अपने दायित्व के प्रति जागृत रहते थे। वे दुकानें जलाते नहीं थे बल्कि उनको जलने से बचाते थे। वे रास्ते रोकते नहीं थे बल्कि रास्ते खोलते थे। वे अन्याय करते नहीं थे बल्कि अन्याय को रोकते थे। वे अधिकार की मांग नहीं करते थे बल्कि अपना कर्तव्य निभाते थे और ऐसा करने के कारण उनका प्रभाव पैदा होता था। रौब पैदा होता था। लोग उनका सम्मान करते थे। शासन प्रशासन में उनकी बात का वजन होता था। हमें वह सब तो अच्छा लगता है। उनके जैसे प्रभाव की तो अपेक्षा करते हैं पर उस दायित्व की बात आने पर उन्हें आदर्शवादी बातें कह कर बचने की कोशिश करते हैं। हमारी अपनी कमियों को छिपाने के लिए या हमारी करने की क्षमता न होने के कारण उन्हें आदर्शवादी बातें कहकर मजाक उड़ाते हैं लेकिन रौब और प्रभाव के पीछे टपकने वाली लार के कारण उन तरीकों की पैरवी करने लगते हैं जिनसे हमारे पूर्वजों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर समाज व राष्ट्र को बचाया। इसीलिए हमें समझने की आवश्यकता है कि रजपूती का अर्थ रौब नहीं बल्कि दायित्व होता है। यदि हमे रजपूती अच्छी लगती है, राजपूत कहलाना अच्छा लगता है, घोड़े और तलवार अच्छे लगते हैं, मूंछों की मरोड़ अच्छी लगती है, ठसका अच्छा लगता है तो उसके लिए दायित्व निभाने के लिए तैयार होना पड़ेगा। इस दायित्व निर्वहन की बात को आदर्शवादी कहकर कन्नी काटने की अपेक्षा स्वयं को प्रस्तुत करना पड़ेगा। स्वयं को तैयार करना पड़ेगा और ऐसा होगा तो वह सब भी होगा जो हमारे भीतर में बैठी वृत्ति की चाह है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ धैर्यपूर्वक उधर गतिमान है।

खरी-खरी

मुद्दों को खोजते राजनीतिक गिद्ध

गिद्ध बहुत ऊंचाई पर उड़ते हैं, अन्य सामान्य पक्षियों से बहुत ऊंचे, लेकिन उनकी दृष्टि जमीन पर पड़े मरे जानवरों पर होती है। ज्यों ही उन्हें जमीन पर किसी मरे जानवर की देह दिखाई देती है वे अपनी ऊंची उड़ान को छोड़कर उस मृत जानवर का मांस नोचने पहुंच जाते हैं। गिद्ध की उड़ान जैसे ऊंची होती है वैसी ही उसकी दृष्टि भी तीक्ष्ण होती है लेकिन वह तीक्ष्ण दृष्टि देखती है केवल मुर्दा देहों को, मांस नोचने के लिए। आज देश में राजनेताओं की भी यही स्थिति होती जा रही है। उनकी भी स्थिति सामान्य जन मानस से ऊंची है जैसे गिद्ध की उड़ान सामान्य पक्षियों से ऊंची होती है। उनकी भी दृष्टि तीक्ष्ण होती है गिद्ध की तरह। वे उड़ते गिद्ध की तरह हैं, देखते गिद्ध की तरह हैं इसीलिए ढूंढते भी गिद्ध की तरह हैं। जिस प्रकार गिद्ध की नजर केवल मृत देह के मांस पर होती है वैसी ही इनकी नजर हर मुद्दे में छिपी उस गंदगी पर होती है जिससे इनकी राजनीति पुष्ट हो सके। ऐसा ही कुछ हाल ही में उत्तरप्रदेश के हाथरस में हुई घटना को लेकर हो रहा है। घटना से पहले मारपीट की शिकायत दर्ज होती है। एक व्यक्ति के खिलाफ दर्ज होती है, फिर उसमें बलात्कार जोड़ा जाता है और लोगों के नाम जोड़े जाते हैं और अंत में उस लड़की की मौत हो जाने पर राजनीतिक गिद्धों को पसंदीदा भोजन मिल जाता है। रही सही कसर उत्तरप्रदेश पुलिस द्वारा लड़की की लाश को रात को जलाने ने पूरी कर दी। राजनीतिक गिद्धों के साथ-साथ मीडिया भी कोओं के रूप में पहुंच गया। तथाकथित सामाजिक नेता भी पहुंच गए बचे-खुचे मांस को नोचने। चारो ओर हल्ला मचा हुआ है। मूल बात छिप गई है। लड़की के साथ क्या हुआ, किसने किया, सच क्या है, झूठ क्या है इससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है लेकिन लेना-देना यह है कि लड़की दलित थी। आरोपित ठाकुर है, ऐसे ठाकुर जो अपने छोटे से खेत में बमुश्किल पेट भरने जितना पैदा कर पाते हैं, ऐसे ठाकुर जो बमुश्किल मजदूरी कर अपना पेट पालते हैं। लेकिन फिर भी वह ठाकुर है, उच्च जाति का है और तथाकथित पीड़ित परिवार दलित है। तथाकथित लिखने पर आपको आपत्ति हो सकती है कि लड़की मर गई फिर भी तथाकथित? निश्चित रूप से लड़की मरी है, उसके साथ बेरहमी से मारपीट की गई होगी तब ही मरी है लेकिन किसने, यह स्पष्ट नहीं है, केवल आरोप है और आरोप तो उस तथाकथित पीड़ित परिवार पर भी लगा है इसीलिए पीड़ित के पहले तथाकथित शब्द का उपयोग किया है? मीडिया वाले जोरशोर से लिख रहे हैं, बता रहे हैं कि उस गांव में जातिभेद बहुत अधिक है। पीड़ित दलित परिवार को कोई सवर्ण नहीं संभाल रहा लेकिन यह नहीं बता रहे कि वे तथाकथित दलित सवर्णों की बहन-बेटियों को उठाने और बलात्कार करने की धमकियां दे रहे हैं। देश के शक्तिशाली परिवार एवं शक्तिहीन होती पार्टी के युवराज केवल भौतिक रूप से ही नहीं गिर रहे बल्कि वैचारिक रूप से गिर रहे हैं इसीलिए तो इस अपराध को **'वर्ग विशेष का जंगलराज'** कहने में संकोच नहीं कर रहे। वैसे जो गिरे हुए हों उनको संकोच होता भी नहीं इसीलिए संकोच करने की आशा भी बेकार है। वैसे केवल चापलूसी कर अपनी राजनीति चमकाने के लिए चरण चंपी करने वाले उनकी पार्टी के नेताओं के अलावा आशा करता भी कौन है लेकिन फिर भी देश की मुख्य विपक्षी पार्टी से देश कुछ तो जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार की अपेक्षा कर ही लेता है। खैर लेकिन ये गिद्ध एक पक्ष के ही हैं, ऐसा नहीं है। एक नवोदित कलाकार की दुर्भाग्यपूर्ण मौत को लेकर विगत दिनों जिस प्रकार मीडिया द्वारा प्रत्यक्ष रूप से व नेताओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से मांस नोचा गया वह भी इस गिद्ध गिरी की ही श्रेणी में आता है। फिर जिस प्रकार पूरे मामले को नैपथ्य में डाल दिया गया वह भी गिद्ध गिरी ही है। लेकिन इस पूरे विवेचन का यह अर्थ नहीं है कि अपराध के खिलाफ आवाज नहीं उठानी चाहिए? किसी घर की इज्जत पर हाथ डालने के राक्षसी कृत्य को सहन कर लेना चाहिए। निश्चित रूप से नहीं किया जाना चाहिए? ऐसे अपराधियों के लिए ऐसी सजा होनी ही चाहिए कि ऐसा अपराध करने वाले के मन में अपराध करने की चाह पैदा होने से पहले सिहरन पैदा हो जाए। लेकिन प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या सजा ही मात्र उपाय है ऐसे अपराध का? क्या इससे पहले सजा नहीं हुई?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंप कर विरोध जताया'

शिव

कुचामन सिटी

श्री डूंगरगढ़

श्री माधोपुर

सुमेरपुर

रानीवाड़ा

विगत दिनों डूंगरपुर जिले में रीट-2018 (शिक्षक भर्ती) के रिक्त रहे अनारक्षित पदों पर अनुसूचित जनजाति के अभ्यार्थियों को मात्र 36 प्रतिशत अंकों के आधार पर नियुक्ति देने को लेकर हुए हिंसक और अराजक आंदोलन में करोड़ों का नुकसान हुआ। अराजकता फैली एवं जानें भी गईं। समाचार माध्यमों में आए समाचारों से ज्ञात हुआ कि सरकार इस अराजक, असंवैधानिक एवं हिंसक आंदोलन के दबाब में आकर आंदोलनकारियों के समर्थन में सुप्रीम कोर्ट जाने को राजी हो गई है। उल्लेखनीय है कि उच्च न्यायालय इस अवैधानिक मांग के खिलाफ पहले ही निर्णय दे चुका है। हालांकि आजकल की सरकारें प्रायः अपने वोटों की खातिर ऐसे अराजक आंदोलनों के आगे झुककर अवैधानिक मांगे मान लेती हैं और इसी कारण इस प्रकार की अराजकता को बढ़ावा मिलता है। ऐसे में एक जिम्मेदार नागरिक का यह कर्तव्य बनता है कि वह सरकारों के समक्ष इस प्रकार के अवैधानिक एवं गैरजिम्मेदाराना निर्णयों के खिलाफ अपना विरोध दर्ज करवाए। हो सकता है वोटों की भूखी सरकारें उसके विरोध को दरकिनार करें, और ऐसा ही होने की संभावना भी रहती है लेकिन उसके बावजूद नागरिक कर्तव्य की यह मांग है कि हमे अपना विरोध दर्ज अवश्य करवाना चाहिए। इसी कर्तव्य भाव से प्रेरित हो श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन ने सरकार के इस प्रकार के निर्णय की संभावना के प्रति अपना विरोध दर्ज करवाने का निर्णय लिया। इस हेतु मुख्यमंत्री जी के नाम एक ज्ञापन तैयार किया गया और 29 सितम्बर से विभिन्न स्थानों पर ज्ञापन देने प्रारम्भ किए। शुरुआत केकड़ी, अजमेर से की गई। इसके आगे बीकानेर, रानी (पाली), सरवाड़ (अजमेर), रूपनगढ़ (अजमेर), सुमेरपुर (पाली), रानीवाड़ा (जालोर), जसवंतपुरा (जालोर), लाडनूं, डेगाना, कुचामन, मेड़ता, डीडवाना (सभी नागौर), शिव, चौहटन, सिणधरी, (सभी बाड़मेर), जालोर, चितलवाना, भीनमाल (सभी जालोर), मारवड़ जंक्शन (पाली), श्री डूंगरगढ़ व नोखा (बीकानेर), श्रीमाधोपुर (सीकर), सिरोही, चित्तौड़गढ़, सायला (जालोर), लक्ष्मणगढ़, पलसाना (सीकर) आदि स्थानों पर प्रशासन के माध्यम से मुख्यमंत्री जी तक यह संदेश पहुंचाया गया कानून और व्यवस्था में विश्वास रखने वाला आम नागरिक सरकार से अराजक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई की अपेक्षा करता है और ऐसे तत्वों से अपनी सुरक्षा के लिए सरकार पर निर्भर है ऐसे में यदि सरकार बार-बार ऐसे तत्वों के समक्ष झुकेगी तो इससे समाज में असुरक्षा का भाव पैदा होता है और ऐसे कदम अन्य समाजों को भी अराजक होने को प्रेरित करते है। इसीलिए सरकार से निवेदन किया गया कि वह विधि सम्मत निर्णय लेकर आमजन को कानून में विश्वास बनाए रखने को प्रेरित करे।

महेसाणा प्रांत की कार्य योजना बैठक

संघ के महेसाणा प्रांत के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की कार्य योजना बैठक अन्नपूर्णा मंदिर मोदीपुर में 4 अक्टूबर को संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाणा के सानिध्य में संपन्न हुई। प्रातः 9 बजे से अपराह्न 3 बजे तक चली इस बैठक में अणुव्रत और महाव्रत को लेकर चर्चा की गई। संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाणा ने बताया कि छोटे-छोटे संकल्प लेकर उनकी दृढ़ क्रियान्विति हमें महान संकल्पों के लिए तैयार करती है। इसीलिए हमें छोटे-छोटे काम अपनी दिनचर्या में शामिल करने चाहिए जो हमें निरन्तर संघ का स्मरण, चिंतन एवं क्रियान्वयन में संलग्न रखें। यही छोटे-छोटे काम हमें संघ के महान संकल्प की ओर बढ़ाते हैं।

स्व. कानसिंह बोघेरा को श्रद्धांजलि : बीकानेर में क्षत्रिय समाज ने श्री क्षत्रिय संघ बीकानेर के तत्वावधान में स्व. कानसिंह बोघेरा को श्रद्धांजलि देने के लिए सभा का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि कानसिंह जी क्षत्रिय सभा बीकानेर में अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता थे एवं सभा को क्रियाशील करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

(मेरी साधना)

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। वर्तमान में इसमें श्रद्धेय आयुवानसिंह की पुस्तक 'मेरी साधना' पर संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास का मार्गदर्शन मिल रहा है। गत अंक से आगे का मार्गदर्शन।

वर्चुअल शाखा के अंतर्गत 28 सितंबर से 03 अक्टूबर तक प्रसारित कड़ियों में संचालन प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने श्रद्धेय आयुवानसिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' पर आगे चर्चा करते हुए कहा कि साधक की साधना का दीप जब तक प्रज्वलित रहता है तब तक वह समाज के लिए सर्वाधिक उपयोगी है किंतु यदि वह प्रमादवश जलना बंद कर दे अर्थात साधना करना छोड़ दे तो वह समाज के लिए निरर्थक बन जायेगा। इस बात का अनुभव होते ही साधक को यह भी समझ में आ जाता है कि उसकी साधना किसी पर उपकार करने के लिए नहीं अपितु अपने अस्तित्व की सार्थकता को सिद्ध करने के लिए ही है। साथ ही उसे इस सत्य का भी भान होता है कि साधना का दीप स्वयं को खाकर जलता है अर्थात साधक को निरंतर स्वयं का क्षय करते रहना पड़ता है। साधक केवल यही कामना रखता है कि उसकी साधना का दीप सदैव जलता रहे और जब काल के वश होकर उसे बुझना पड़े तो उससे पूर्व वह अपने समान हजारों दीपकों को अपनी भांति जलना सिखा दे। जिस प्रकार एक बीज अपना बलिदान करके अपने जैसे अनेकों बीजों के निर्माण की आधारभूमि तैयार करता है उसी प्रकार साधक भी अपना सर्वस्व साधना मार्ग पर समर्पित करके अपने जैसे अनेकों साधकों को उस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। साधक अपनी पीड़ा को मिटाना नहीं चाहता अपितु उस पीड़ा को विस्तारित कर के सभी के हृदय में वही पीड़ा जगाना चाहता है ताकि एक की वेदना सबकी वेदना बन जाए। साधक जानता है कि यदि वह अपनी साधना बंद कर दे तो धर्म और संस्कृति का विनाश हो जाएगा, वेदों और वर्णाश्रम व्यवस्था को मिथ्या समझ लिया जाएगा और हमारे पूर्वजों का परिश्रम व बलिदान व्यर्थ हो जाएगा। साधक की गौरवशाली परंपरा को समाप्त करने के अनेक षड्यंत्र किए जा रहे हैं परंतु साधक अपनी परम्परा की रक्षा के लिए कृत-संकल्पित है। अपने ध्येय के लिए साधक सभी प्रकार की कामनाओं का त्याग कर देता है, परिणामस्वरूप जिन प्राप्तियों के पीछे संसार भागता है वे सभी प्राप्तियां साधक के लिए सहज सुलभ हो जाती हैं परंतु साधक उन्हें बिना कोई महत्त्व दिए अपनी साधना में लगा रहता है। क्योंकि साधक भली भांति यह जानता है कि किए बिना कुछ होता नहीं और दिए बिना कुछ मिलता नहीं। इसी सिद्धांत को समझकर वह अपनी साधना द्वारा अखंड और अनंत शक्ति के निर्माण हेतु साधना में लगा रहता है। ऐसा होने पर साधक उस स्थिति में पहुंच जाता है जब उसकी साधना के सामने समस्त बाधाएं हार जाती हैं, संसार के समस्त वैभव उसकी साधना के तेज के आगे फीके पड़ जाते हैं क्योंकि अब वह अपनी साधना से जीवन का एक भी दिन, शक्ति का एक भी अणु, द्रव्य का एक भी पैसा और हृदय का एक भी पवित्र भाव छिपा कर नहीं रखता।

राष्ट्रीय छात्रवृति पोर्टल

नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल एक एकीकृत समाधान है, जिसके माध्यम से यह विद्यार्थियों को आवेदन, आवेदन प्राप्ति, प्रोसेसिंग, अप्रूवल और स्टूडेंट्स को मिलने वाली विभिन्न स्कॉलरशिप के बैंक खाते में संवितरण की सुविधा प्रदान करता है। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (NeGP) के तहत राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल को मिशन मोड प्रोजेक्ट के रूप में लिया जाता है। इस पहल का उद्देश्य छात्रवृत्ति अनुप्रयोगों के तेजी से और प्रभावी निपटान के लिए एक सरलीकृत, मिशन-उन्मुख, जवाबदेह, उत्तरदायी और पारदर्शी 'स्मार्ट' प्रणाली प्रदान करना है और बिना किसी रिसाव के सीधे लाभार्थियों के खाते में धन की डिलीवरी करना है।

मिशन : राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना के तहत राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल के मिशन मोड प्रोजेक्ट (एमएमपी) का उद्देश्य देश भर में केंद्र सरकार, राज्य सरकार और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा शुरू की गई विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं को लागू करने के लिए सामान्य इलेक्ट्रॉनिक पोर्टल प्रदान करना है।

उद्देश्य : छात्रों के लिए छात्रवृत्ति का समय पर संवितरण सुनिश्चित करना, केंद्र और राज्य सरकारों की विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के लिए एक सामान्य पोर्टल प्रदान करना। छात्रवृत्ति का एक पारदर्शी डेटाबेस बनाना।

छात्रों के लिए सरल प्रक्रिया व बेहतर पारदर्शिता

1. सभी छात्रवृत्तियों की जानकारी एक छतरी के नीचे उपलब्ध है।

2. सभी छात्रवृत्ति के लिए एकल एकीकृत आवेदन इसमें उपलब्ध है।

3. सिस्टम उन योजनाओं का सुझाव देता है जिसके लिए एक छात्र पात्र है।

4. एक ही छात्र एकबार से अधिक बार आवेदन नहीं कर सकता है।

मानकीकरण में मदद करता है: अखिल भारतीय स्तर पर संस्थानों और पाठ्यक्रमों के लिए मास्टर डेटा के मानकीकरण में मदद करता है। मंत्रालयों और विभागों के लिए एक निर्णय समर्थन प्रणाली (DSS) के रूप में कार्य करता है, जहां उक्त तारीख तक की जानकारी मांग पर उपलब्ध होती है। इसमें छात्रवृत्ति वितरण के प्रत्येक चरण की निगरानी करने के लिए यानी छात्र पंजीकरण से लेकर धन वितरण तक की निगरानी की व्यवस्था उपलब्ध है।

राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करने की प्रक्रिया

रजिस्टर कैसे करें-

जो विद्यार्थी छात्रवृति के लिए पहली बार आवेदन कर रहे हैं उन्हें पोर्टल पर Fresh applicant पे रजिस्ट्रेशन करना है। रजिस्ट्रेशन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान दें कि आप जो भी जानकारी भर रहे हैं वह सटीक और आपके पास उपलब्ध दस्तावेजों से अक्षरशः मेल खानी चाहिए। जिन विद्यार्थीओ की आयु 18 वर्ष से कम है उनका आवेदन उनके माता पिता/ अभिभावक द्वारा किया जाना चाहिए।

ऑनलाइन आवेदन करते समय निम्नलिखित दस्तावेज अपने पास रखें।

1 छात्र के शैक्षिणिक (Educatinal) दस्तावेज।

i) जन्म तारीख:- शैक्षणिक प्रमाणपत्र में जो जन्म तारीख लिखी गई है, वही आवेदन में भरें।

ii) मूल निवास का राज्य:- छात्र जिस राज्य का स्थाई निवासी हो वही राज्य अंकित करे। एक बार इसे अंकित करने के बाद किसी भी परिस्थिति में नहीं बदला जा सकता है। इसीलिए सावधानीपूर्वक सटीक ही अंकित करे। यदि छात्र अपने स्थाई निवास के अलावा अन्य राज्य के स्कूल/ इन्स्टिट्यूट में पढ़ाई करता है तो उसे निर्धारित प्रारूप में मूलनिवास प्रमाणपत्र देना होगा।

iii) छात्रवृति के प्रकार:-

छात्रवृति को मुख्यतः दो वर्गो में वर्गीकृत किया जा सकता है

1) Pre-matric : मेट्रिक से पहले जो पहली से दसवीं कक्षा तक के छात्रों को मिलती है।

2) Post-matric : यह 11वीं, 12वीं व उससे उच्च स्तर की शिक्षा के लिए मिलती है जैसे- ITI, Bsc, Bcom, B.tech, Medical student आदि तथा जो उच्च संस्थानो में अध्ययन करते हैं जैसे की IIM, IIT आदि ।

छात्र का नाम:- अपने शैक्षणिक प्रमाणपत्र में जो नाम अंकित हो वही नाम लिखें। 10वीं के बाद की छात्रवृति के लिए 10वीं के प्रमाणपत्र में अंकित नाम ही अंकित करें।

मोबाईल नम्बर:- जो मोबाईल नम्बर हम अंकित करेंगे उसपर ही OTP व छात्रवृति से संबंधित अन्य अपडेट आते रहेंगे इसीलिए सटीक व नियमित उपयोग में आने वाला मोबाईल नम्बर ही दें। Post Matric छात्रवृति के लिए एक मोबाईल नम्बर से केवल एक ही रजिस्ट्रेशन होगा।

- रणजीतसिंह आलासन

लोकेन्द्रसिंह पीथलपुर बने अतिरिक्त महासचिव

पीथलपुर निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में निवासरत लोकेन्द्रसिंह पुत्र मदनसिंह को भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ का अतिरिक्त राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत किया गया है। वे 31 दिसम्बर 2022 तक के लिए इस पद पर मनोनीत हुए हैं।

जितेन्द्रसिंह मगरा बनेंगे पुलिस उपाधीक्षक

राज्य सरकार द्वारा राजस्थान के खिलाड़ियों को राजस्थान की राजकीय सेवाओं में नियुक्ति देने की योजना के तहत बाड़मेर के मगरा निवासी जितेन्द्रसिंह को पुलिस उपाधीक्षक पद पर नियुक्ति मिलेगी। जितेन्द्रसिंह ख्याति प्राप्त घुड़सवार हैं।

महिपालसिंह बनेंगे क्षेत्रीय वन अधिकारी

राज्य सरकार द्वारा उत्कृष्ट खिलाड़ियों को राजकीय सेवाओं में नियुक्ति देने के क्रम में जैसलमेर जिले के झिंझनियाली गांव के प्रतिभावान बॉस्केटबाल खिलाड़ी महिपालसिंह को क्षेत्रीय वन अधिकारी के रूप में नियुक्ति दी जा रही है।

निशा कंवर बनी सहायक आबकारी अधिकारी

उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी में नियुक्ति के क्रम में क्रोएशिया पैरा वर्ल्ड कप में 10 मीटर एयर पिस्टल में स्वर्ण पदक जीतने वाली निशा कंवर महरोली को राज्य सरकार ने सहायक आबकारी नियुक्त किया है।

पदमायण का विमोचन

रामचरित मानस की तरह चौपाइयों दोहों एवं सोरठों की शैली में महासती पद्मिनी के गौरवशाली जीवन पर लिखी कालात्मक पुस्तक पदमायण का विमोचन 11 अक्टूबर को मेवाड़ के पूर्व महाराणा महेन्द्रसिंह जी मेवाड़ द्वारा किया गया। डिंगल भाषा में लिखी पुस्तक की लेखिका श्रीमती शैल कंवर मदारा है।

विश्वजीत सिंह वरड़वा की 9वीं रैंक

भारतीय सेना द्वारा ऑफिसर लेवल के लिए आयोजित टेक्निकल ग्रेजुएट कोर्स परीक्षा में नागौर जिले के बरड़वा गांव निवासी विश्वजीतसिंह शेखावत को 9वीं रैंक मिली है। इससे पहले विश्वजीत सिंह ने यूपीएससी द्वारा आयोजित सीडीएस परीक्षा में 32वीं व इंडियन मिलिट्री एकेडमी के लिए आयोजित परीक्षा में 65वीं रैंक हासिल की थी। एक वर्ष के प्रशिक्षण के पश्चात विश्वजीत वायुसेना में लेफ्टिनेंट के पद पर तैनात होंगे।

प्रतिभा

राजगढ़ (अजमेर) के मूल निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में निवासरत कुलदीपसिंह की पुत्री भव्या राजे ने दसवीं में सीबीएसई बोर्ड में 92.2 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं

(पृष्ठ दो का शेष)

शार्दूलसिंह... नवाब की सेना में हरावल में चुरु के इन्द्रसिंह अपने सैनिकों के साथ थे। वि.सं. 1788 के पौष माह की एक प्रातः दोनों ओर के योद्धा एक-दूसरे से तलवारों सहित मिलने रणभूमि में आ गए। राजपूतों की सेना के दोनों भागों ने एक साथ नवाब की सेना पर आक्रमण किया। राजपूतों के इस द्रुत आक्रमण के समक्ष इन्द्रसिंह की सेना टिक ना सकी और युद्ध क्षेत्र से भाग निकली। अब राजपूतों की तलवारों के समक्ष कयामखानी आ गए। सल्हेदी सिंह ने द्वंद्व युद्ध में नवाब के सेनानायक जाफर खां को मार गिराया और कयामखानी सेना में भगदड़ मच गई। नवाब भी शार्दूलसिंह और गुमानसिंह लाडखानी के वार से घायल होकर युद्ध क्षेत्र से भाग निकला और किले में शरण पाई। नवाब ने जानबक्शी करवा कर किला खाली कर दिया और उस पर राजपूतों की ध्वाजा फहरा दी गई। शिवसिंह का फतेहपुर पर आधिपत्य करवा कर शार्दूलसिंह झुंझुनूं लौट गए। बडवासी का नवाब अमानुला खां जो शार्दूलसिंह के झुंझुनूं हस्तगत करने के बाद ही उनसे शत्रुता का भाव रखता था, उसने नारनौल के सूबेदार की मध्यस्था से दिल्ली से शाही सेना का सहयोग शार्दूलसिंह के विरुद्ध प्राप्त की और सेना सहित झुंझुनूं पर आक्रमण के लिए आया। शार्दूलसिंह को यह सूचना मिलते ही वह अपने पुत्र जोरावर सिंह के साथ अमानुला खां का सामना करने डूमरा नामक स्थान पर आए। जोरावर सिंह कद-काठ, रंगरूप में एकदम अपने पिता शार्दूलसिंह जैसे ही दिखते थे। अमानुला खां और जोरावर सिंह एक-दूसरे पर टूट पड़े, अमानुला खां के एक वार से जब जोरावर सिंह घायल हो गए तो शार्दूलसिंह ने अमानुला खां को ललकारा पर जोरावर सिंह ने कहा कि 'जोरे की शिकार तो जोरो ही मारसी।' क्रोधित जोरावर सिंह ने भाले का ऐसा प्रहार अमानुला खां पर किया जो उसे बींध कर उसके पार हो गया और वो मारा गया। अमानुला खां के मारे जाते ही सेना भाग खड़ी हुई और कयामखानियों का अंतिम प्रयास भी विफल हो गया। जोधपुर के बीकानेर पर आक्रमण के समय जयपुर महाराजा के साथ जोधपुर पर आक्रमण कर बीकानेर राज्य की रक्षा की। बीकानेर के शासक जोरावरसिंह के रोगग्रस्त होने पर सांईदासोतो ने बीकानेर राज्य में उपद्रव मचा रखा था तब जयपुर महाराजा के कहने पर शार्दूलसिंह ने लालसिंह भादरा के विरुद्ध सैन्य अभियान कर बीकानेर राज्य में शान्ति स्थापित की। गगवाना के युद्ध में भी शार्दूलसिंह ने अद्भुत शौर्य दिखलाया। पिता की उपेक्षा के कारण उनका जीवन प्रारम्भ से ही संघर्षमय रहा लेकिन अपने पुरूषार्थ से, बाहुबल से वो झुंझुनूं के शासक बने। अपने भाई बन्धुओं के लिए, सजातीय बन्धुओं की सहायता के लिए वो हर क्षण सजग रहे। राजा केसरीसिंह के बाद उन्होंने शेखावटी को एकता के सूत्र में बांधा। जीवन के अन्तिम काल में वो परशरामपुरा में रहे। वहीं वि.सं. 1799 को अपने समस्त कर्तव्यों को पूरा कर इस संसार सागर से पार चले गए। शार्दूलसिंह अदम्य साहसी, बहादुर योद्धा, व्यवहार कुशल, कूटनीतिज्ञ, समय के पारखी, कर्तव्यनिष्ठ क्षत्रिय थे जो भावी पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ : शार्दूल : सुयश : कु. रघुनाथसिंह।
ठिकाणा चनाणा का इतिहास : ठाकुर ईश्वरसिंह चनाणा
(जोरावर वंश प्रकाश)

- खींवसिंह सुल्ताना

(पृष्ठ चार का शेष)

मुद्दों... निर्भया कांड में तमाम कानूनी दाव पेचों के बाद मौत की सजा हुई लेकिन क्या उस सजा मात्र से ऐसे अपराधों की पुनरावृत्ति रुक पाई? सजा एक निरोधात्मक उपाय है जो एक निश्चित सीमा तक प्रभावी भी है लेकिन समस्या के कारणों का निदान और उपचार इससे अधिक महत्वपूर्ण है। एक बालिका महाविद्यालय के छात्रसंघ कार्यालय के उद्घाटन में एक मुख्यमंत्री महोदय ने भाषण दिया कि लड़के-लड़कियों को प्रेम करने का अधिकार होना चाहिए, परिवारों को आड़े नहीं आना चाहिए। देश में पक्ष-विपक्ष में नेतृत्व कर रहे लोग अविवाहित रहकर उनकी निजी जीवन में न झौंकने की अपेक्षा करते हैं। न्यायालय बिना विवाह साथ रहने को ही अधिकार नहीं बता रहे बल्कि समलैंगिक विवाह को भी अधिकार बता रहे हैं। इससे भी आगे वे देह व्यापार को भी महिला स्वतंत्रता का अंग मान रहे हैं। बिना विवाह एकाधिक महिला पुरुषों के साथ शारीरिक संबंध बनाने की पैरवी करने वाले तथाकथित कलाकार युवाओं के आदर्श बने हुए हैं, विवाहेत्तर संबंधों को हेय न मानने की सलाह दी जाती है, राजनेता अंतवस्त्रों के रंग बताते हुए सार्वजनिक भाषण देते हैं, ऐसे माहोल में अनैतिक यौन संबंधों पर हायतौबा मचाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री करने वाले लोग उन कारणों की बात करने पर मोरल पुलिसिंग या रूढिगत सोच की बाते करने लगते हैं। ऐसे लोगों से गिद्धगिरि करने के अलावा कुछ अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए।

(पृष्ठ एक का शेष)

जन्म शताब्दी... 17 नवम्बर 1944 को दीपावली के दिन पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की एवं 5 व 6 मई 1945 को माट्साब के सभापतित्व में उसका प्रथम अधिवेशन जोधपुर में करवाया। 11 व 12 मई 1945 को दूसरा अधिवेशन हुआ लेकिन पूज्य तनसिंह जी उसकी कार्यप्रणाली से संतुष्ट नहीं थे और उनका इस विषय में चिंतन जारी था। इसी के फलस्वरूप 22 दिसम्बर 1946 को संघ का वर्तमान स्वरूप अस्तित्व में आया। सितम्बर 1947 में संघ के चौथे शिविर पीटीसी बाड़मेर में माट्साब पहली बार नए स्वरूप के सम्पर्क में आए। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से उन्होंने संघ के तत्वज्ञान को भलिभांति समझा और निरन्तर आने लगे। 1956 से 1959 तक मुझे उनके साथ चार शिविर करने का अवसर मिला। इतने गंभीर थे कि उनकी हंसी मजाक भी तुरन्त समझ में नहीं आती थी। वे कहकर मंद मुस्कान के साथ आगे बढ़ जाते और साथियों को बहुत बाद समझ में आता। लोकसंग्रह की अद्भुत क्षमता थी। बोलते समय श्रोताओं के चेहरे को पढ़ते रहते थे। जब बाघसिंह जी तनसिंह जी के निकट सम्पर्क में नहीं रहे तो उनकी नजरे आयुवानसिंह जी पर टिकीं। उन्हें संघ प्रमुख का दायित्व देने का निश्चय किया और 1954 के जीणमाता ओटीसी में अपने निकटतम लोगों को ऐसा संदेश देकर स्वयं शिविर में नहीं गए। उस समय संघ प्रमुख वे ही चुने जाते थे जो शिविर में उपस्थित हो। आयुवानसिंह जी को भी पूर्व में ही ऐसा अंदेशा हो गया इसीलिए वे भी नहीं गए लेकिन क्योंकि तनसिंह जी ने अपने साथियों को पूर्व में ही ऐसा संदेश दे दिया था इसीलिए आयुवानसिंह जी को संघ प्रमुख चुन लिया गया। आयुवानसिंह जी ने मना किया लेकिन दायित्वबोध का हवाला देकर उन्हें मना लिया गया। श्री सरवड़ी ने बताया कि 1959 से हल्दीघाटी ओटीसी में उन्हें फिर संघ प्रमुख चुना गया। उस शिविर में वे भी थे। कुल 20 मतदाता थे। आयुवानसिंह जी व तनसिंह जी दोनों में से एक को चुनना था। तनसिंह जी चाहते थे कि आयुवानसिंह जी ही संघ प्रमुख रहें इसीलिए उन्होंने मतदाताओं को ऐसा संदेश भी अप्रत्यक्ष रूप से दिया। दोनों के 10-10 वोट आए। तब तनसिंह जी ने पुनः क्रोधित होकर सबको समझाया। चुनाव अधिकारी प्रो. मदनसिंह के आपत्ति करने पर उन्होंने कहा कि मैं प्रचार नहीं कर रहा बल्कि समय की आवश्यकता समझा रहा हूं। पुनः मतदान हुआ और आयुवानसिंह को एक वोट अधिक मिला और वे संघ प्रमुख चुने गए। लेकिन उसके बाद घटनाक्रम कुछ इस प्रकार हुआ कि तनसिंह जी को लगा कि संघ उनके दर्शन से अलग दिशा में जा रहा है। उन्होंने सितम्बर में सेतरावा शिविर के दौरान संचालन प्रमुख के पद से अपना त्यागपत्र एक पत्र के साथ एक स्वयंसेवक के माध्यम से भेजा। शिविर के बाद माट्साब को पत्र मिला। वे अगले शिविर के लिए रहुआ (कच्छ भुज) गए और वहीं से 28.9.1959 को पत्र लिखा जिसमें पूज्य तनसिंह जी के त्यागपत्र को अनुचित बताते हुए लिखा कि आप संघ के जन्मदाता हैं। संघ आपकी भावनाओं, कार्यशक्ति, विचारधारा और प्रेरणा को मूर्त रूप है। इसीलिए मैं आपका त्यागपत्र स्वीकार नहीं करता तथा संघ प्रमुख के महान दायित्व से 16 अक्टूबर के बाद मुक्त होता हूं। साथ ही लिखा कि आजीवन संघ का स्वयंसेवक बना रहूंगा एवं कुछ समय आत्मचिंतन के बाद रचनात्मक कार्य प्रारम्भ करूंगा। इसके बाद अक्टूबर में जैसलमेर शिविर में पूज्य माट्साब की देखरेख में संघ प्रमुख के चुनाव का संविधान बना। 16 अक्टूबर से पूज्य आयुवानसिंह जी संघ प्रमुख के दायित्व से मुक्त हुए और पूर्णकालिक राजनीति में सक्रिय रहे। इसके बाद भी जब-जब किसी ने बुलाया संघ के कार्यक्रमों में आते रहे और पूज्य तनसिंह जी से उनका सम्पर्क बना रहा। संघ प्रमुख के रूप में जितना अच्छा संघ के लिए किया जा सकता था, उन्होंने किया। ऐसे महापुरुष के पुण्य स्मरण का सप्ताह चल रहा है। संघ में उनका, स्मरण उनके साहित्य के रूप में, उनके कृतित्व के रूप में एवं उनके विचारों के रुप में सदैव बना रहता है और बना रहेगा। उद्बोधन माला की अगली कड़ी के रूप में संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं बाड़मेर स्थित श्री मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास के अधीक्षक कमलसिंह जी चुली ने 'पूज्य आयुवानसिंह जी एवं साहित्य' विषय पर 12 अक्टूबर को अपने विचार रखे। उन्होंने उनका प्रारंभिक जीवन परिचय देते हुए बताया कि 1946 में पूज्य माट्साब का बाड़मेर तबादला हुआ। वे यहां श्री मल्लीनाथ छात्रावास के सहायक वार्डन के रूप में रहे एवं यहां के विद्यार्थियों के लिए एक छात्रावास प्रार्थना रची, जो आज भी गाई जाती है। भू स्वामी आंदोलन के तहत जेल यात्रा के दौरान उन्होंने साहित्य सृजन प्रारम्भ किया। ममता और कर्तव्य, हमारी ऐतिहासिक भूलें, राजपूत और भविष्य एवं मेरी साधना उनकी लोकप्रिय रचनाएं हैं। साहित्य में उनके व्यक्तित्व का व्यापक प्रकटीकरण हुआ है। मेरी साधना के 111 अवतरण में संघ की पूरी साधना का क्रमबद्ध वर्णन है। अवतरणा शैली में लिखी इस पुस्तक में विराम चिह्नों का न्यूनतम उपयोग हुआ है। राजपूत और भविष्य में 12 अवतरण है जो राजपूत जाति के प्राचीन से अर्वाचीन वर्णन है एवं भविष्य की योजना है। हमारी ऐतिहासिक भूलें उनका सूंधामाता में 1958 में आयोजित शिविर के दौरान 'हमारे ऐतिहासिक अंतरावलोकन' विषय पर दिया गया प्रवचन है जिसके वक्ता आयुवानसिंह जी थे, स्रोता शिविरार्थी एवं लिपिकार पूज्य तनसिंह जी थे। श्री कमलसिंह जी ने बताया कि उस शिविर में श्रोता के रूप में उपस्थित रहने का उन्हें भी सौभाग्य मिला था। गद्य के अलावा उन्होंने पद्य रचना भी की। वीर रस के साथ-साथ प्रकृति का भी वर्णन करने वाले दोहों की रचना की। लक्ष्मी, दुर्गा के साथ-साथ धरती का भी लाक्षणिक वर्णन उन्होंने अपने राजस्थानी दोहों में किया है। युद्धों का भी वर्णन किया है। कहानी, लेखन की उनकी विशिष्ट शैली उनकी पुस्तक 'ममता और कर्तव्य' में प्रकट हुई है। उन्होंने भावनात्मक, विचारात्मक एवं घटनात्मक तीनों प्रकार की कहानियों की रचना की। इस प्रकार पूज्य आयुवानसिंह का साहित्य सृजन समाज जागरण को उद्देश्य बनाकर साहित्य की सभी विद्याओं में प्रकट हुआ। संघ के संघ प्रमुख रहते उन्होंने कई नवीन प्रयोग भी किए। डाकू उन्मूलन के अभियान के तहत हुए अत्याचारों का उन्होंने विरोध किया। इसके लिए बनी समिति के सदस्य के रूप में उन्होंने उन क्षेत्रों का दौरा किया एवं सरकार के समक्ष वस्तुस्थिति पेश की। वे बहुत मृदुभाषी एवं त्वरित बुद्धि वाले थे। इस प्रकार पूज्य माट्साब की सृजन शक्ति हमारे लिए चिर प्रेरणादायी साहित्य के रूप में सदैव उपलब्ध है।

ब्राह्मण... माननीय संघ प्रमुख श्री अपने साथियों सहित 5 अक्टूबर को स्वामी जी का सानिध्य प्राप्त करने फरीदाबाद पधारे एवं कुछ दिन वहीं रुककर सत्संग लाभ लिया। फरीदाबाद आश्रम पधारने पर स्वामीजी ने ही संघ प्रमुख श्री से मिलने का संदेश भिजवाया था, उसी की अनुपालना में संघ प्रमुख श्री यहां पहुंचे थे। इसी दौरान 7 अक्टूबर को केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत भी स्वामीजी एवं संघ प्रमुख श्री का सानिध्य पाने आश्रम आए। यहां रुककर सत्संग का लाभ लिया।

दलपतसिंह राखी का देहावसान

दलपतसिंह राखी

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **दलपतसिंह राखी** का 26 सितम्बर 2020 को देहावसान हो गया। जनवरी 1942 में जन्में दलपतसिंह प्रारम्भ के वर्षों में संघ के सम्पर्क में आए थे। परमेश्वर दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

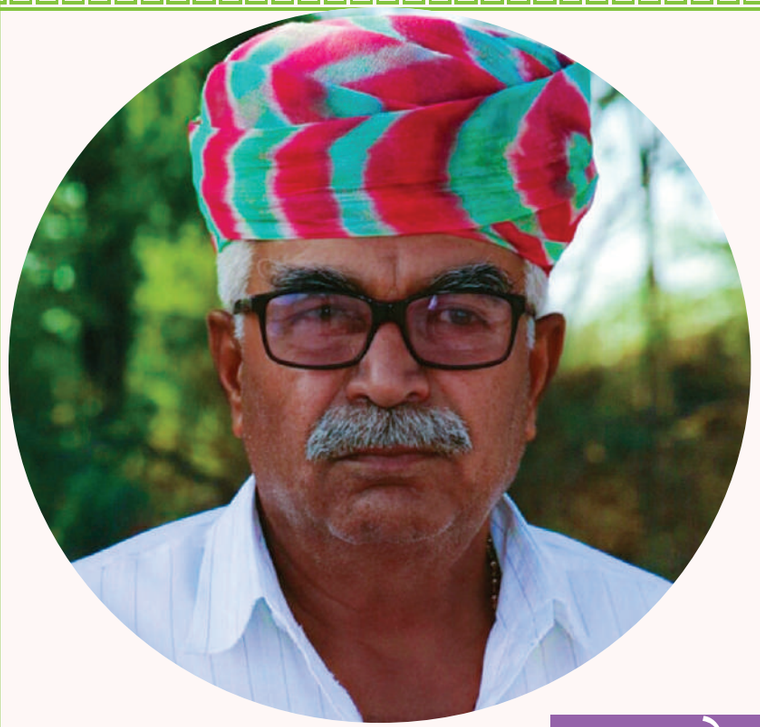

हमारे आदरणीय

श्री नरपत सिंह

झलोड़ा (सेवानिवृत्त थानेदार)

के **सरपंच** ग्राम पंचायत, **दांतल** (जैसलमेर) के रूप में निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई एवम् उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

उत्तमसिंह विरोल, (जालोर) हाल मुम्बई

शंभुसिंह बावरला (जालोर) हाल मुम्बई

नारायणसिंह फागोतरा हाल मुम्बई

इन्दरसिंह काठाड़ी (बाड़मेर) हाल मुम्बई

विक्रमसिंह लीलासर (बाड़मेर) हाल मुम्बई

हुकमसिंह पिपळून (बाड़मेर) हाल मुम्बई

नरपतसिंह मेसरा (बनासकांठा) हाल मुम्बई

ईश्वरसिंह नेनावा (बनासकांठा) हाल मुम्बई

दलपतसिंह नोसर (बाड़मेर) हाल मुम्बई

पृथ्वीसिंह जालीपा (बाड़मेर) हाल मुम्बई

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org